वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

श्रीमती वंदना शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
हिंदी -विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

शोधसार

राष्ट्रीय चेतना से तात्पर्य है राष्ट्र के प्रति प्रेम भाव का होना। वर्तमान समय को देखते हुए कहां जा सकता है कि आम जनता के हृदय में देश प्रेम की भावना कम होती जा रही है, मनुष्य राष्ट्रहित के बारे में ना सोच कर स्वयं अपने बारे में अधिक ध्यान देता है, राष्ट्रीय चेतना का भाव दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है। उनके अंदर वसुधैव कुटुंबकम की भावना बहुत कम होती जा रही है। इन परिस्थितियों को देखते हुए राष्ट्रीय भाव को जागृत करना सर्वोपरि है। राष्ट्रीय भाव हम सब के अंतःकरण में जागृत किया जाना अति आवश्यक है, इसके लिए राष्ट्र के प्रति समर्पण की इच्छा अग्रसित करना चाहिए। इसमें किसी जाति धर्म का भेदभाव नहीं आना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य का यह दायित्व है कि राष्ट्रीय भाव सर्वोपरि हो।

जिस तरह एक सैनिक बिना अपने प्राणों की चिंता किए देश की रक्षा के लिए सरहद पर खड़ा रहता है। वह हर क्षण देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार रहता है और सर्दी गर्मी बारिश सहन करता है। क्योंकि उसके लिए राष्ट्रीय चेतना का भाव मूल्यवान है इसमें सार्वभौमिकता का समावेश होता हैं। व्यक्तिगत बात से ऊपर उठकर एक उच्च स्तर की सोच का विकास होता है। इसमें जाति, धर्म, लिंग, संप्रदाय, यह सब एक सीमित भू - भाग के अंतर्गत आते हैं जबकि राष्ट्रीयता का भाव इन सबसे ऊपर है। देखा जाए तो भारत वर्ष में समय-समय पर कई विदेशियों ने अपनी अपनी राष्ट्रीयता एवं संस्कृति से भारत की एकता और अखंडता को प्रभावित किया है। राष्ट्र की रक्षा करना उसके प्रति आत्म बलिदान करने का भाव जागृत करना हम सबका कर्तव्य है। देश के हित की रक्षा करना एवं गौरव गान का दायरा और प्रस्तुत करना राष्ट्रीय चेतना की परिधि के अंतर्गत आता है।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

बीज शब्द

राष्ट्रीय चेतना, छायावादी कवि, सामाजिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय गौरव गान, सर्वोपर।

चयन का कारण

राष्ट्रीय चेतना को जन सामान्य में जागरूक करने का प्रमुख कारण यह है की पूर्व में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने देश प्रेम की भावना को अपने साहित्य में स्थान दिया है किंतु देखा जाए तो एकरूपता का विकास भारत वर्ष मे आधुनिक काल में ही हुआ है इसके पहले जब भारत में अंग्रेजी सत्ता संपूर्ण देश में स्थापित थी और एक ही राजा संपूर्ण प्रजा का मालिक होता था । इसी राजा का आदेश समस्त प्रजा को मानना पड़ता था। इन्हीं समस्त परिस्थितियों का अवलोकन किया गया। राष्ट्रीय भाव के विकास की बात करें तो सर्वप्रथम पश्चिमी देशों में राष्ट्रीय प्रेम का भाव जागृत हुआ। अन्य देशों की अपेक्षा भारत के लोगों के मन में स्वयं अपनी प्रमुखता की भावना अधिक थी भारत देश अनेकता में एकता की पहचान से जाना जाने वाला देश है जिसमें अनेक रीति रिवाज धर्म भाषा संस्कृति के लोग रहते हैं। हमारा देश अनेकता में एकता को सजोए है। अनेक ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने राष्ट्रीय गौरव को ऊंचा उठाया है साथ ही साथ देश को स्वतंत्र कराने में आजादी की जंग में भाग भी लिया है। जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान जो देश प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना के लिए सजक एवं समर्पित रही हैं । उन्होंने अपने साहित्य सृजन से एवं कहानियों के माध्यम से अपने राष्ट्रीय भाव को व्यक्त किया है।

शोध विस्तार

छायावाद युग में राष्ट्रीय चेतना के भाव जागृत हुए। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समकालीन समय में राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावना का विस्तार किया । राष्ट्रकवि कवि की उपाधि से सम्मानित मैथिली शरण गुप्त ने भारत देश की संस्कृति एवं भारत माता के गुणों का आह्वाहन किया । उन्होंने अपनी प्रेरणा आम जनता तक पहुंचाई और भारत - भारती जैसी रचनाओं के माध्यम से निर्भीकता के भाव को प्रकट किया ।

महादेवी वर्मा के अनुसार" छायावाद तत्त्वत: प्रकृति के बीच जीवन का उदग्रीथ है ।"... उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"[1]

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

अर्थात् राष्ट्रीयता के विकास का भाव पश्चिमी देशों में देखा गया ।

छायावाद युग के पूर्व द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के फल स्वरुप नैतिकता,अतिशय, स्थलता, इतिवृत्तात्मकता का विरोध हुआ इस युग में प्रकृति प्रेमसौंदर्य चित्रण, की प्रधानता थी। छायावाद के जनक कहे जाने वाले कवि जयशंकर प्रसाद ने गुलामी की पीड़ा को अंतर चेतना में इस प्रकार प्रकट किया है-

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,प्रबुद्ध शुद्ध भारती ।
स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो ।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बड़े चलो बड़े चलो ॥"[2]

अर्थात प्रसाद जी ने चंद्रगुप्त नाटक के माध्यम से भारत में रहने वाले लोगों को अपने देश के प्रति समर्पण एवं पूर्णता के भाव को उजागर किया है। उन्होंने राष्ट्रीयता के भाव को अपनी साहित्यिक रचना में सम्मिलित भी किया है। वहीं दूसरी ओर देखा जाए तो कवियत्री महादेवी वर्मा ने प्राकृतिक प्रेम, प्रकृति का मानवीकरण एवं व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया है। उनकीविरह वेदना में नवजागरण का लक्ष्य दिखाई देता है।

छायावाद के कवियों में प्रकृति के सुकुमार कवि के नाम से जाने जाने वाले सुमित्रानंदन पंत जी ने अपनी कविताओं मे राष्ट्रीय प्रेम की प्रेरणा के लिए जन्मभूमि को श्रेय दिया है उनकी कविता में लिखा है कि-

"छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाली तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूं लोचन ?
भूल अभी से इस जग को ।"[3]

पंत जी ने इस कविता के माध्यम से भारत वासियों को सचेत रहने के लिए कहा है ।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

उन्होंने प्रकृति प्रेम मे आलंबन का चित्रण किया है और उद्दीपन रूप संवेदनात्मक एवं रहस्यात्मक प्रतिक्षात्मक रूप का वर्णन किया है। साहित्य जगत में क्रांतिकारी कवि के रूप में जाने जाने वाले सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी तेजस्वी रूप से मुखरित हुए हैं।

छायावाद के प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा राष्ट्र के प्रति अपनी चेष्टा अनेक प्रसंगों के माध्यम से व्यक्त की है । सन 1920 के समय देश में जो घटनाए घटित हो रही थी उसी समय प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने निराला की अंतर चेतना को झकझोर दिया। राम की शक्ति पूजा कविता में उन्होंने व्यक्त किया है कि -

"होगी जय,होगी जय,हेपुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन ॥"4

इस कविता में निराला ने शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम को धर्म का एवं राम को धर्म का प्रतीक बताया है। निराला जी भारतीयों को परतंत्रता के विरुद्ध भारतीयों को जागरुक करते थे । वे ओज औदात्य के कवि हैं ।

"पशु नहीं, वीर तुम,
समर शूर, क्रूर नहीं
कालचक्र में हो दबे,
आज तुम राजकुवर
समर सरताज।"[5]

अर्थात भारतवासियों को संबोधित करते हुए निराला ने कहा है कि तुम सूर्य के समान वीर हो, हृदय के कठोर नहीं हो, तुम शूरवीर हो, पराक्रमी हो। वे सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध आवाज उठाते थे उनकी काव्य रचनाओं क्रांतिकारी के मूल स्वरों से युक्त है ।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमीमाला- में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥
चाह नहीं, समाटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥

मुझे तोड़ लेना वनमाली।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

उस पथ में देना तुम फेंक॥
मातृभूमि- पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक॥[6]

पुष्प की अभिलाषा कविता में राष्ट्रीय भावना एवं वीर रस से ओत -प्रोत होने के साथ-साथ पुष्प ने इच्छा जाहिर की है कि उसे उस मार्ग पर फेंक दिया जाए जिस पथ से देश की रक्षा के लिए वीर सैनिक निकलते हों। माखनलाल चतुर्वेदी देश प्रेम एवं प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हैं। वे समसामयिक,जनमानस, राष्ट्रीय चेतना, अभिव्यक्त करते हैं ।

छायावादी कवियों ने समकालीन परिस्थितियों को देखते हुए विदेशियों द्वारा देश पर साम्राज्यवादी नीति का घोर विरोध किया । उस समय स्वतंत्रता संग्राम के लिए अनेकों वीर सूली पर चढ़ा दिए गए। ऐसे समय में राष्ट्रीय एकता और अखंडता धूमिल होने लगी तभी इन साहित्यकारों ने विषमता एवं विसंगतियों को तो दूर करने का प्रयास तो किया और साथ ही स्वाधीनता संग्राम में आगे आने के लिए प्रेरणा दी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ.अशोक तिवारी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा/ प्रकाशक साहित्य भवन / पृष्ठ संख्या 73
2. जयशंकर प्रसाद / नाटक चंद्रगुप्त के चौथे अंक का छठ दृश्य
3. डॉ नागेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास / पृष्ठ संख्या 535
4. डॉ संजीव कुमार जैन / आधुनिक काव्य भाग 2 / कैलाश पुस्तक सदन भोपाल/ पृष्ठ संख्या 63
5. डॉ वीरेंद्र मोहन/ अर्वाचीन हिंदी काव्य /मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल/ पृष्ठ संख्या 23
6. डॉ अशोक तिवारी / राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा/ साहित्य भवन / पृष्ठ संख्या 74